6/3/67

6-3-67 ओम शान्ती प्रातःक्लास

मीठे-2 रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप फिर से समझा रहे है। रोज-2 समझानी देते है। बच्चे तो समझते है कि बरोबर हम गीता का ज्ञान ही पढ़ रहे है। कल्प पहले मुआफिक। परन्तु कृष्ण नही पढ़ाता है। परमपिता परमात्मा हमको पढ़ाते है। परमात्मा के लिये यह तो सबको याद है कि वो निराकार लिंग है। अभी हमको बाप फिर से राजयोग सिखा रहे है। उन्होंने तो झूठी ही पुस्तक बना कर नाम रख दिया है श्रीमद्भगवद गीता। अभी तुम बच्चे सिद्ध कर बताते हो यह है सच्ची गीता पाठशाला। बाकी सब है झूठी। उसमें से झूठ पना भी समझाना पड़े। झूठी गीता पढ़ते-2 भारत दुर्गती को पहुंच गया है। तुम अभी डायरेक्ट ही गीता के भगवान से सुन रहे हो। भल गीता आगे भी सुनाते थे परन्तु आगे समझते थे कृष्ण भगवानोवाच। वो तो है रांग। कृष्ण का नाम गीता में डालने से और फिर उस गीता को पढ़ते-2 भारतवासियों ने दुर्गती को पाया है। अर्थात झूठी गीता सुन-2 दुर्गती को पाया है। सच्ची गीता से अभी तुम सदगती को पा रहे हो। अब तुम सच्ची गीता भी छपवाते हो। सिन्धी में भी लिखी हुई है परन्तु उसमें अभी इतनी परफेक्ट नही है। जो कि मनुष्य समझे। भारत वासियों का सारा मदार गीता पर ही है। इस गीता में भी लगा हुआ है कि रूद्र ज्ञान यज्ञ रचा। यह यज्ञ भी है तो पाठशाला भी है। यज्ञ में कब पाठशाला होती नही है। कब-2 यज्ञ रचते है तो उसमें बहुत शास्त्र भी रखते है। बड़ा रूद्र यज्ञ रचते है। उसको हवन भी कहते है। और फिर सभी शास्त्र भी बैठ सुनाते है। इनसब में मूल है गीता। सर्वशास्त्र मयी शिरोमणी श्रीमदभागवत गीता ही गाई जाती है। तुम अर्थ भी समझते हो। गीता वास्तव में भगवान की गाई हुई है। भगवान एक ही बार गीता गाते है। बाकी शास्त्र कोई भगवान के नही है। उस गीता में नाम डाल दिया है कृष्ण का तो उस गीता को ही फिर भक्ति मार्ग में पढ़ते-2 दुर्गती को पा लिया है। फिर बाप जब सच्ची गीता आकर सुनाते है तो हम सदगती को पाते है। मनुष्य तो यह नही समझते है। मनुष्य तो है बन्दर बुधी। मनुष्य को ही बन्दर कहागया है। रामायण में भी दिखाया है कि बन्दरों की सैना ली वास्तव में है मनुष्यों की बात। मनुष्यों में ही बन्दरों जैसे अवगुण होते है। शास्त्र तो है ही भक्ति मार्ग के। उनको कितने प्रेम से बैठ कर पढ़ते है। अब तुम समझते हो कि वो सब दुर्गती के ही है। इसीलिये ही उनमें ध्यान नही जाता है। बाप जो सर्व का सदगती दाता है उनको ही याद करना है। गीता भल पढ़ते आते है परन्तु रचता और रचना को ना जानने कारण नेती-2 करते आते है। सच्ची गीता तो सच्चा बाप ही आकर सुनाते है। यह है विचार सागर मंथन करने की बातें। जो सर्विस पर होंगे उनका ही अच्छी रीती ध्यान जावेगा कि किस प्रकार मनुष्यों को अच्छी रीती समझावें। पर्चा ऐसा तीर डालो जो मनुष्यों को पूछना पड़े कि यह क्या कहते हो। सीधा बताना है कि कृष्ण भगवानोवाच की गीता को पढ़ते-2 भारतवासियों ने दुर्गती को पाया है। शिव भगवानोवाच की सच्ची गीता को पढ़ कर सच्ची सदगती को पाते है। बाबा ने यह भी कहा है कि हर एक चित्र पर नम्बर ही लगा हुआ हो कि ज्ञान सागर पतित पावन गीता ज्ञान दाता परमप्रिय परमपिता परम सिक्षक परम सतगुरू त्रिमुर्ती शिव भगवानोवाच। यह अक्षर तो जरूर लिखो जो कि मनुष्य समझ जावे कि त्रिमुर्ती शिव परमात्मा ही गीता का ज्ञान दाता है नो कि कृष्ण। ओपीनियनस भी इसी पर ही लिखवाते रहो। बस जो बाबा ने कहा वो ही लिखते रहते है। और कुछ भी विचार सागर मथन नही करते है। तो अब बच्चों को ही समझाते रहते है। यह डायरेक्शन जाते है। मैगज़ीन जो छपवाते है, मैगज़ीन तो कामन है। दुनिया में ढेर छपती है। यह तो जैसे कि हम बन्दरों की कापी करते है। वातावरण आद दुनियां से बिलकुल न्यारा होना चाहिये। मैगज़ीन्स तो सब ही
* ******* * *******
छपवाते रहते है। हमारी तो मुख्य है गीता। बाप तो दिन प्रति दिन नई-2 पुआइन्टस भी देते रहते है। तो क्या करना चाहिये? सच्ची गीता बनानी चाहिये। फिर उसमें पाट वालयूम-सैकिंड, थर्ड वालयूम
** ************************
निकालते रहना चाहिये। यह गीता तुम कोई भी अखबार में भी डाल सकते है। जो मनुष्य समझे कि

पृ. 2

कि यह गीता तो एक ही बार बाप सुनाते है जिससे ही पुरानी दुनियाँ स्वाहा हो जाती है। वो गीता मनुष्य पढ़ते आते है। पुरानी दुनियाँ तो स्वाहा होती ही नही है। तो यह नई नई पुआइन्टस शाम करने की है। गीता कानाम अखबार में डालो तो बहुत ही मनुष्य लेवें। और लिखत भी ऐसी हो जो किसीको ज्ञान का तीर लग जावे। वो वेद शास्त्र गीता आद जो भी पढ़ते है उनमें है अज्ञान। भक्ति मार्ग के शास्त्र है नां। अब यह है ज्ञान मार्ग। तो अब तुम्हारी मैगजीन के बदले वास्तव में वास्तव गीता निकलनी चाहिये। अखबार में डालना चाहिये2 तुम लिख सकते हो कि सच्ची गीता से भारत हैवन बनता बनता है। अक्षर ऐसे क्लीयर हो जो तो कोई सुनते ही फौरन मंगवा लेवें। सच्ची गीता सुनने से भारत हैवन में जा रहे हैं। सच्ची और झूठी गीता में रात-दिन का फर्क है। मैगजिन में तो कुछ भी नही है। हमारा बाबा तो गीता ही सुनाते है। संजय ने भी गीता ही लिखी है नां कि मैगजिन। ज्ञानामृत भी नही कह सकते है। गीता को ज्ञानमृत कहना भी रांग है। शिव बाबा ने इतने दिन नही कहा। दिन प्रति दिन नई-2 बाते सुनाते है नां। ऐसे नही आना चाहिये कि आगे बाबाने क्या नही कहा? ड्रामा में ही नहीं था। अब बा बाप कहते है कि यह मैगजिन काम की नही है। ऐसे-2 मैगजीन किताब आद तो दुनियाँ में बहुत ही छपते कोई कोई का दाम जास्ती कोई का कम होता है। तुमको तो बड़े दाम वाली यह बड़ी गीता बनानीचाहिये2 गीता पर ही ध्यान जाना चाहिये। बाकी फु फलाने ने यह पूछा यह किया यह सर्विस समाचार.....नही। गीता ही बनानी पड़े। दिन प्रति दिन नई पुआइन्टस तो बाप सुनाते ही रहते है। तो बाबा की मुरली से पुआइन्टस निकाल कर इकठी करनी चाहिये। फिर कुछ पुरानी कुछ नई पुआइन्टस। सच्ची गीता ही निकालनी चाहिये। उसमें भले लिखा हुआ हो कि झूठी गीता कृष्ण की पढ़ने से भारत हेल में गया है। सच्ची गीता सुनने से भारत हैवन में जा रहा है। तो यह आवाज फिर बहुतों के कानों में जावेगा। लाईब्रेरी में भी मुफत रख सक्ती हो। गवर्मेन्ट भी मुफत रखती है। परन्तु उन सभी किताबों आद में तो किचड़ा ही है। डूबोने लिये। यह तो गोल्डन ऐज में ले जाते है। इसलिये ही लिखते भी है कि राईज और फाल। हिन्दी में कहते है भारत का उत्थान तथा पतन। (राईज अर्थात कन्टरशन आफ डीटी डायनेस्टी। 100% पीस परासपेरीटी की स्थापना होती है। फिर कल्प आद फाल होता है। डेविल डायनेस्टी का फाल। राईज यह कन्टरशन डीटी डायनेस्टी कब होता है। फाल के साथ डिस्ट्रक्शन लगना है। सभी डेवल डायनेस्टी का विनाश। एकदम परफेक्ट रस में लिखना चाहिये जो किसकोई खोलने से ही पढ़े। प्रेक्टीकल में ही हो रहा है नां।) तुम्हारा सारा मदार गीता पर है। बाप ही आकर सच्ची गीता सुनाते है। बाबा रोज इस पर ही समझाते है बच्चे मनमनाभव। देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़ अपने को आत्मा समझो। देह का सारा इतना पसारा है। आत्मा तो आत्मा ही है। बाप कहते है इस देह के सारे पसारे को भूल कर अपने को आत्मा समझो। मुझ बाप को याद करो। अभी घर जाना है। आधा कल्प वापस जाने लिये ही इतनी भक्ति आद की है। सतयुग में तो कोई वापस जाने का पुरुषार्थ ही नही करते है। वहाँ तो सुख ही सुख है। गाते भी है दुःखमें सिमरण सब करें सुख में करे ना कोये। परन्तु सुखकब है दुःख कब है यह नहीजानते है। मनुष्यों की बुद्धि तो बिलकुल ही जैसे कि खोखली हो गई है। अब तुम जानते हो कि शंकराचार्य आद भी पोलिटीकल बातों में घुस गये है। वास्तव में इनको पोलिटिकल बातों में घुसना नही है। हमारी पोलिटीकल व बाते तो है गुप्त। हम भी रूहानी मिलेट्री है नां। शिव बाबा की शिव शक्ति सैना है। इनका भी अर्थ कोई समझ नही सक्ते है। देवियों आद की भी इतनी पूजा होती है परन्तु कोई भी उनकी बायोग्राफी आद को नही जानते है। जिनकी पूजा करते है उनकी बायोग्राफी को तो जानना चाहिये नां। ऊच ते ऊच शिव की पूजा है फिर ब्रह्मा विष्णु शंकर की। फिर ल-न की राधा की कृष्ण के मन्दिर है। और तो कोई है नही है। एक ही शिव बाबा पर कितने ही नाम रख कर मन्दिर बना दिये है। अभी तुम्हारी

बुद्धी में सारा चक्र है। ड्रामा में मुख्य एक्टर्स भी होते है ना। वो है हद का ड्रामा। यह है बेहद का ड्रामा। उसमें मुख्य कौन-2 है यह भी तुम जानते हो। मनुष्यों की बुद्धि में तो है ठिक्करियां। कह देते है हे राम जी संसार बना ही नही है। इस पर भी एक शास्त्र बनाया है। फिर तीक-2 बैठ लिखी है। अब बाप कहते है शास्त्र आद की तीक-2 बन्द। यह तीक-2 बन्द करो। बाप कहते है बाप को याद करना है और सृष्टी चक्र को याद करना है। बाप की ही याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम निरोगी बनेंगे। आयू भी बड़ी होगी। चक्र को जानने से चक्र वर्ती राजा बनेंगे। अब हो नर्क के मालिक। फिर स्वर्ग के मालिक बनेंगे। स्वर्ग के मालिक तो सभी बनते है। फिर उसमें भी है पद। जितने आप समान बनावेंगे उतना ऊंच पद पावेंगे। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान ही नही करेंगे तो तो रिटर्न में क्या मिलेगा। कोई शाहुकार बनते है तो कहते है कि इसने पास्ट जन्म में अच्छे कर्म किये है जो दान पुण्य अच्छी ही किया है। अभी बच्चे जानते है कि रावण राज्य में तो सभी पतित ही है। पाप कर्म ही करते रहते है। यह दुनियां ही है पापात्माओं की। इनमें सबसे जास्ती पापात्मा कौन है? तो अपने को शिवोअहम् तत् त्वम् कहते है। पुण्यात्माओं में से सबसे पुण्यात्मा है ल-न। हां ब्राह्मणों को भी ऊंच रखेंगे जो कि सब को ही ऊंच बनाते है। वो तो है प्रारब्ध। यह ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण कुल भूषण श्रीमत पर यह श्रेष्ठ काम कर रहे है। ब्रह्मा का नाम मुख्य है। त्रिमूर्ती ब्रह्मा कहते है ना। अगर शंकर बड़ा होता तो फिर त्रिमूर्ती शंकर क्यों नहीकहते। अब तो तुमको हर एक बात में ही त्रिमूर्ती शिव कहना पड़े। ब्रह्मा द्वारा

****

दैवता स्थापना....यह तो ज्ञान है ना। विराट स्वरूप भी बनाते है परन्तु उसमें ना शिव को दिखाते है ना ही ब्रह्मा को दिखाते है। देवता क्षत्री वैश्य शूद्र ही सिर्फ दिखाते है। ब्राह्मणों और शिव को तो गुम ही कर दिया है। चार वरण दिखाते है, पांचवा गुम कर दिया है। यह भी तुम बच्चों को समझाना है। तुम्हारे में से भी यथार्थ रीती कोई की ही बुद्धी में मुश्किल ही बैठता है। अथाह पुआइन्टस है ना। जिसको ही टापिक्स भी कहते है। कितनी टापिक्स मिलती है। अभी जहां तहां यह टापिक रखो कि झूठी गीता से भारत की दुर्गती। फाल। सच्ची गीता से भारत की सदगती। राईज। यह बहुत अच्छा टापिक है। झूठी गीता पढ़ने से भारत दुर्गती को पाया है। कंगाल बन गया है। सच्ची गीता भगवान द्वारा सुननेसे मनुष्य से देवता, विश्व के मालिक बन जाते है। टापिक कितनीअच्छी है। परन्तु समझाने की भी अक्ल चाहिये ना। अभी सच्ची गीता बनानी चाहिये। उसमें यह क्लीयर लिख देना चाहिये। तो मनुष्य समझे और पूछे। शिव भगवानोवाच से सदगती2 कृष्ण भगवानोवाच से दुर्गती। कितना सहज है। एक-2 ज्ञान की पुआइन्टस लाखों रुपयों की है। जिससे ही तुम क्या बनते हो। तुम्हारे तो कदम-2 में हीं पदम है। इसीलिये ही देवताओं को भी पदम का ही फूल दिखाते है। तुम ब्राह्मण मुख वंशावली ब्राह्मणों का नाम ही गुम कर दिया है। वो ब्राह्मण लोग कच्छ में कुरम, गीता रखते है। अभी आप हो सच्चे ब्राह्मण। तुम्हारे कच्छ में है सच्चम। उनकी कच्छ में है कुरम। तो तुमको नशा चढ़ना चाहिये। हम तो श्रीमत पर स्वर्ग बना रहे है। बाप राजयोग सिखा रहे है ना। तुम्हारे पास कोई पुस्तक आद नही है। बाबा कितना सिम्पल बैज दे देते है। उसमें त्रिमूर्ती का चित्रहै= तो सारी गीता उसी में आ जाती है। सेकेन्ड में सारी गीता समझाई जाती है। इस बैज द्वारा तुम सेकेन्ड में भी कोई को समझा सकते हो। यह तुम्हारा बाप है। उनको याद करने से तुम्हारे पाप विनाश होते होंगे। ट्रेन मे जाते चलते फिरते कोई भी मिले बोलो आप को ईश्वरिय सौगात देते है। तुम इनको अच्छी रीती समझेंगे तो यह बनेंगे। कृष्ण पुरी में तो सब तो सब जानाचाहते है ना। इस पढ़ाई से यह बन सकते है। पढ़ाई से राजाई स्थापन होती है। और धर्म स्थापक कोई राजाई नही स्थापन करते है। तुम जानते हो हम राजयोग सिखाते है। भविष्य 21 जन्मों लिये। कितनी अच्छी पढ़ाई है। सिर्फ रोजाना एक ही घण्टा पढ़ो।

बस। वो पढ़ाई तो चसर पाँच घण्टे पढ़ाई जाती है। यह तो एक घण्टा भी बस। ऐसा भी सवेरे का समय ऐसा है तो जो कि सबको ही फुरसत होती है। बाकी कोई वान्धेलियाँ आद है सवेरे नहीं आ सकती है तो और टाईम रखते है। वैज लगा हुआ है कहीं भी जाओ तो यह पैगाम दे आओ। अखवार में तो यह वैज डूल नहीं सकते है। एक ही तरफ का डूल सकेंगें। मनुष्य यू ही तो समझ नहीं सकेंगें सिवाय समझाने के। है वहुत सहज। यह धन्धा तो कोई भी कर सकते है। अच्छा खुद भले याद नहीं करते है दूसरों को याद दिलावें वो भी अच्छा। दूसरे को कहेंगें देही अभिमानी बनो। खुद देह अभिमान में होंगें तो कुछ ना कुछ विकर्म होता ही रहेगा। पहले-2 मनसा में तूफान आते है जिनसें ही फिर कर्मणा में आते है। मनसा में तो वहुत आवेंगें। उस पर ही वुधी सें काम लेना है। वुरा काम कव करना नहीं है। अच्छा ही काम करना है। संकल्प अच्छे भी आते है, वुरे भी आते है। वुरे को रोकना चाहिये। यह वुधी वाप नें दी है। दूसरा कोई समझ नहीं सकते। वो तो रांग काम ही करते रहते है। तुमको तो राईट ही काम करने है। अच्छे पुरुषार्थ सें राईट काम होता है। वाप तो वहुत ही अच्छी रीती समझाते है। संजय को भी समझाते रहते है कि पुरानी रस्म छोड़ दो। समथिंग न्यू। अव सच्ची गीता निकालनी चाहिये। भल अखवार में भी पड़ जावे। झूठी गीता से दुर्गती कृष्ण भगवानोवाच। सच्ची गीता सें सदगती शिव भगवानोवाच। गीता तें योग और ज्ञान दोनो ही है। फिर योग का भी अलग किताव क्यों वनावे। गीता में ही योग भी आ जाता है। वावा नें पहले डायरेक्शन नहीं दिया अव देते है। दिन प्रति दिन नई डायरेक्शन मिलती रहती है। ओम

3-3-67:- की रही हुई प्रातःक्लास की पुआइन्टसः- भक्ति मार्ग अव खलास। सतयुगमें तो ऐसे काम क
****
होते ही नहीं है। ड्रामा को वहुत अच्छी रीती समझना है। सेकिंड वा सेकिंड की नूंध है। कल्प वाद फिर यही वात रिपीट होगी। ड्रामा को भी अच्छी रीती समझना चाहिये। अच्छा कोई जास्ती नहीं याद कर सक्ते है तो वाप कहते है अल्फ को वे वादशाही ही को याद करो। अन्दर में यह धुन लगा दो। हम आत्मा कैसे 84जन्मों का चक्र लगा कर आती है। हम पहले देवता थे फिर क्षत्री वने... चित्र पर वैठ समझाओ। वहुत आसान है। यह है रूहानी वच्चों की रूह-रिहान। वाप तो रूह-रिहान करते ही है वच्चों सें। और कोई सें तो कर नहीं सक्ते है। वाप कहते है अपने को आत्मा समझो। आत्मा ही सव कुछ करती है। वाप याद दिलाते है कि तुमने 84जन्म लिये है। मनुष्य ही वने हो। कोई घोड़ा गधा नहीं वने हो। जैसे वाप आर्डीनेन्स निकालते है कि विकार में नहीं जाना है। वैसे ही यह भी आर्डीनेन्स निकालते है कि किसीको रोना नहीं है। सतयुग त्रेता में कव कोई रोते नहीं है। छोटे वच्चे भी नहीं रोते है। रोने का हुक्म नहीं है। वो तो है ही हर्षित रहने की दुनियाँ। इसकी प्रैक्टिस सारी ही यहां करनी है। गुड़ मार्निंग।

4-3-67:- रही प्रात क्लास की वाकी पुआइन्टः-तुम वच्चे जानते हो कि हम अभी संगम पर है। कल फिर सतयुग में होंगें। हम ट्रान्सफर हो जावेंगें। पुरानी दुनियाँ का विनाश तो सामने ही खड़ा है। फिर हम जाकर नई दुनिया में अपना राज्य करेंगें। अनेकों वार ही हमने यह चक्र लगाया है। यह वेहद का ड्रामा है। अव वाप कहते है कि मुझे याद करो तो ही विकर्म विनाश होंगें। वुलाते भी हो कि हे पतित पावन आओ आकर पावन वनाओ। क्यों कि आत्मा दुःखी वनी हुई है। यह है ही दुःख धाम। वाप कहते है अव इनको भूलते ही जाओ। वाप नया मकान वनाते है तो पुराने सें दिल हट जाती है ना। यह है वेहद क की वात। स्थापना हो रही है। जरूर पुरानी दुनियां का विनाश होगा। तो क्यों नहीं अपने घर और राजधानी को याद करेंगें। इसमें कोई तकलीफ तो है ही नहीं। कहीं भी जाओ वुधी में वाप को और वर्से को याद करो। इनसे मतलव छोड़ दो। मुझ माशूक को ही याद करो। तुम आधा कल्प के आशिक हो याद करते आये हो। अव आया हूँ। तो अव सव वाकी देहधारियों को छोड़ मुझ एक वाप को ही याद करो तो तुम सतोप्रधान वनेंगें। 84जन्मों की सीढ़ी उतरते आते हो। अव इसी जन्म में चढ़ती कला होती है। ओम